

कैबनेट ने स्थानीय निकायों में OBC आरक्षण दोगुना किया

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में छत्तीसगढ़ सरकार ने राज्य भर में प्रतिनिधित्व बढ़ाने के उद्देश्य से **OBC आरक्षण** में वृद्धि की है।
- **प्रमुख OBC आरक्षण में वृद्धि:**
 - सरकार ने पंचायत और शहरी निकायों में OBC आरक्षण को **25% से बढ़ाकर 50%** कर दिया है, जिसमें जिला **पंचायत** अध्यक्ष और **नगर नगिम महापौर** जैसी भूमिकाएँ शामिल हैं, जबकि यह सुनिश्चित किया गया है कि आरक्षण जनसंख्या अनुपात के अनुरूप हो।
- **बहिष्करण की शर्त:**
 - यह आरक्षण **50%** या उससे अधिक **अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति आरक्षण** वाले निकायों पर लागू नहीं होता है।

भारत में आरक्षण को न्यंत्रित करने वाले संवैधानिक प्रावधान

- भाग XVI केन्द्रीय एवं राज्य विधानमंडलों में **अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों** के आरक्षण से संबंधित है।
- संविधान के **अनुच्छेद 15(4) और 16(4)** राज्य और केंद्र सरकारों को अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के सदस्यों के लिये सरकारी सेवाओं में सीटें आरक्षण करने का अधिकार देते हैं।
- संविधान (**77वाँ संशोधन**) अधिनियम, **1995** द्वारा संविधान में संशोधन किया गया तथा **अनुच्छेद 16 में एक नया खंड (4A) जोड़ा गया**, ताकि सरकार पदोन्नति में आरक्षण प्रदान कर सके।
- बाद में, आरक्षण देकर पदोन्नत **अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति** के उम्मीदवारों को परिणामी वरिष्ठता प्रदान करने के लिये **संविधान (85वाँ संशोधन) अधिनियम, 2001** द्वारा **अनुच्छेद 16 (4B)** को शामिल किया गया, जो राज्य को किसी वर्ष में अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के लिये आरक्षण रक्तियों को अगले वर्ष भरने का अधिकार देता है, जिससे उस वर्ष की कुल रक्तियों पर पचास प्रतिशत आरक्षण की अधिकतम सीमा समाप्त हो जाती है।
- **अनुच्छेद 330 और 332** क्रमशः संसद और राज्य विधानसभाओं में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिये सीटों के आरक्षण के माध्यम से विशिष्ट प्रतिनिधित्व का प्रावधान करते हैं।
- **अनुच्छेद 243D** प्रत्येक पंचायत में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिये सीटों का आरक्षण प्रदान करता है।
- **अनुच्छेद 233T** प्रत्येक नगर पालिका में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिये सीटों के आरक्षण का प्रावधान करता है।
- **संविधान के अनुच्छेद 335** में कहा गया है कि प्रशासन की प्रभावकारिता बनाए रखने के लिये अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जनजातियों के दावों पर विचार किया जाएगा।